महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

अंक - १० | माह :- अगस्त-सितम्बर | वर्ष २०२२ | विक्रमी संवत् २०७९

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हर-घर तिरंगा अभियान

13 से 15 अगस्त 2022

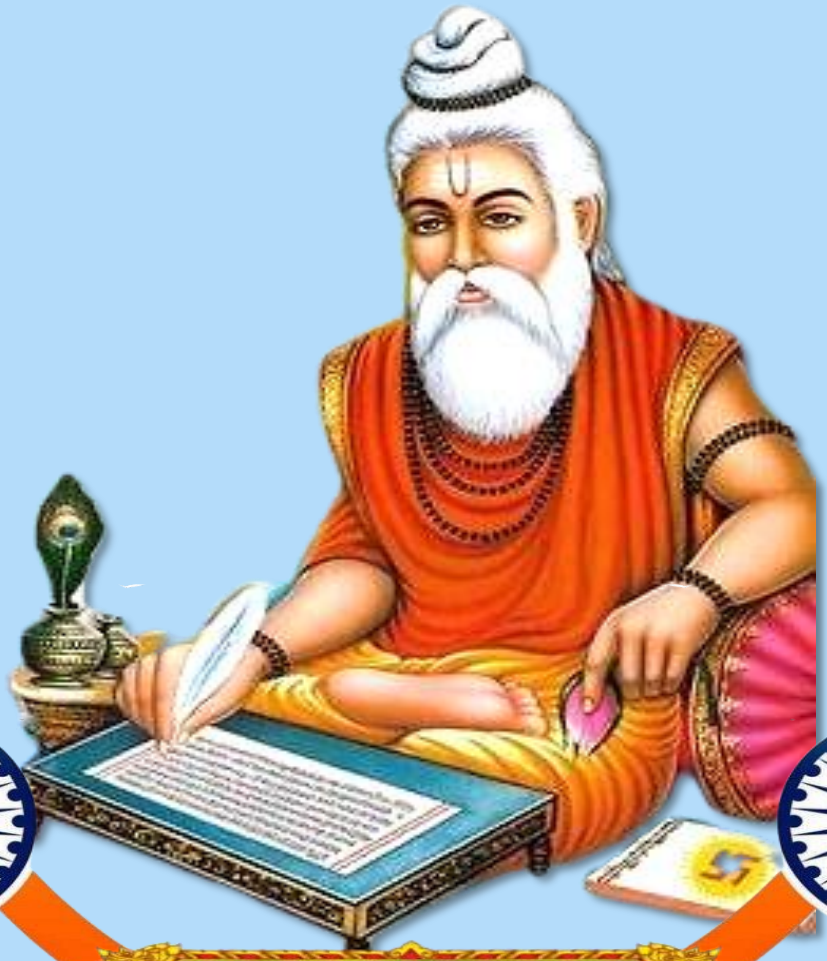

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. गोविन्द बल्लभ
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादिका

रजनी

ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे
सम्पादकः

सम्पादकीयम्

अगस्तमासस्य पञ्चदशदिनाङ्के स्वाधीनतादिवसः प्रत्येकवर्षे महोत्साहेन समायोज्यते । दिवसेऽस्मिन् स्वाधीनताआन्दोलनस्य नायकाणां स्मरणं कृत्वा राष्ट्रहितस्य कार्यक्रमाणामपि आयोजनं क्रियते । 1947 ईस्वीयवर्षस्य पञ्चदशादिनाङ्के अंग्रेजीशासनात् वयं स्वाधीनः अभवन् । इयं स्वाधीनता भारतमातुः वीरपुत्राणां पराक्रमेण बलिदानेन अस्माभिः संप्राप्ताः । स्वाधीनतायाः पश्चात् अद्यावधिपर्यन्तं भारतवर्षः सदैव स्वस्य तन्त्रस्य स्थापनायै सदैव संलग्नः वर्तते । यदा भारतवर्षः स्वातन्त्र्यस्य स्थापनां करिष्यति तदैवास्माकं स्वाधीनतायाः संकल्प अपि सफलो भविष्यति । अस्माकं भारतवर्षः दीर्घकालपर्यन्तं पराधीनः अभवत् । अस्यां पराधीनतायां भारतीय सभ्यतायाः संस्कृतेश्च ह्रासः जातः । अनेनैव कारणेन तत्काले भारतवर्षस्य स्वस्य तन्त्रः अपि विध्वंसो अभवत् । पराधीनतायाः पूर्व-भारतवर्षे वैदिकसंस्कृतेः कालखण्ड आसीत् । तदा भारतम् विश्वगुरुनाम्ना सम्पूर्णे विश्वे प्रसिद्धः । समग्रविश्वतः जिज्ञासुजनाः भारते शिक्षायै समागताः आसन् । मनुस्मृतौ अस्मिन् विषये प्राप्यतेयत्-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।

स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।

भारतवर्षस्य गौरवं पराधीनताकाले विध्वंसः अभवत् । ततः पूर्व भारतवर्षे शासनव्यवस्था-समाजव्यवस्था-न्यायव्यवस्था-शिक्षाव्यवस्था चादयः सर्वाणि तन्त्राणि भारतीयतन्त्राणि आसन् । अनेन एव तन्त्रव्यवस्था अस्माकं भारतवर्षः स्वतंत्रः निगदितः । पराधीनतायाम् अस्माभिः सुखं कदापि न प्राप्यते । अतः उक्तञ्च-

"पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं"।

अतः पराधीनतायाः समाप्तिः सुखप्राप्तये अत्यावश्यकम् कर्म निगदितं । अस्माकं महापुरुषाः पराधीनतायाः विमुक्तये स्वाधीनताप्राप्तये च नैकेभ्यः वर्षेभ्यः संघर्षरताः आसन् । दीर्घकालपर्यन्तं स्वाधीनतायाः संघर्षस्य समाप्तिः 1947 तमे वर्षे अभवत् । अयं वर्षः अस्माकं स्वाधीनतावर्षस्य अमृतमहोत्सववर्षः भारतीयसर्वकारेण घोषितः । इतः पश्चात् भारतस्य स्वाधीनता शताब्दीवर्षपर्यन्तं पञ्चविंशतिवर्षाणि अमृतकालरूपेण भविष्यन्ति ।

आगामिन्याः पञ्चविंशति वर्षाणि भारतस्य कृते अतिमहत्त्वस्य सन्ति । एतेषु पञ्चविंशतिवर्षेषु भारतीय स्वत्वस्य स्थापना कथं भवेयुः एतस्य कृते भारतीय ज्ञान परम्परायाः महती भूमिका भविष्यति । एतस्य कृते शैक्षणिक संस्थाः प्रयासरताः सन्ति । आशासे यदनेन भारतं स्वाधीनतायाः स्वतन्त्रतां प्रति पुरस्सरः भविष्यति।

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालय, कैथलः अपि अस्मिन् अमृतमहोत्सवे स्वस्य तन्त्रस्य प्राप्तये आहुतिप्रदानं करोति। विश्वविद्यालयपक्षतः सर्वेषाम् कृते अमृतमहोत्सवकालस्य शुभकामनाः ।

राष्ट्र संरक्षण एवं उन्नति के आवश्यक गुण

किसी भी राष्ट्र में स्वराज्य की प्राप्ति मात्र होने से यह नहीं कहा जा सकता कि उसके संरक्षण व उन्नति की योग्यता उसने प्राप्त कर ली है स्वराज्य प्राप्ति मात्र से राष्ट्र का संरक्षण एवं संवर्धन कदापि सम्भव नही है उसके रक्षण व उन्नति के लिए कुछ जीवन्त तत्त्व आवश्यक है जिनके अभाव में किसी भी राष्ट्र का संरक्षण एवं उन्नति सम्भव नही है।

हमारे शास्त्रों में राष्ट्र रक्षण एवं उन्नति के लिए आवश्यक तत्त्वो का विस्तार से वर्णन मिलता है। अथर्ववेद में एक मन्त्र के माध्यम से इन तत्त्वो को स्पष्ट करने का प्रयास किया है मन्त्र में उपदेश दिया गया है –

सत्यं वृहत् ऋतं उग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथ्वीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भाव्यस्य पत्नी उकं लोकं पृथ्वी नः कृणोतु॥
(अथर्ववेद 12.1.1)

अर्थात् सत्य वृहत् भाव (व्यापक दृष्टिकोण) सरलता, उग्रता, दक्षता, शीतोष्ण सहन करने की शक्ति ब्रह्मज्ञान और यज्ञ यह तत्त्व मातृभूमि को धारण करते है। यह हमारी भूत, वर्तमान और भविष्य का पालन करने वाली हमारे लिए विस्तृत कार्यक्षेत्र प्रदान करे। मातृभूमि के संरक्षण के लिए मन्त्र मे आठ सदगुणों का वर्णन कियी गया है। राष्ट्र की उन्नति चाहने वाले व्यक्ति में यह सदगुण आवश्यक है। अन्यथा वह राष्ट्र रक्षा व उन्नति में समर्थ नही है इन तत्वो के अभाव में राष्ट्रोन्नति की मात्र कल्पना ही की जा सकती है। जिस राष्ट्र में यह आठ सदगुण (तत्व) विद्यमान होगें वह राष्ट्र निरन्तर उन्नति करेगा और संरक्षित रहेगा।

1. सत्य - प्रथम राष्ट्र रक्षक गुण है सत्य। सत्य के बिना राष्ट्र रक्षण सम्भव नही है। राष्ट्र के मनुष्यों में चाहिए कि उनके आचार-विचार व व्यवहार में सत्यता हो। सत्य आचार-विचार से उत्तम व्यवहार सम्भव है उत्तम व्यवहार से राष्ट्र का रक्षण होता है।

2. वृहत् (व्यापकता) - द्वितीय गुण है वृहद् भाव। मनुष्य को मनुष्य के प्रति व्यापक दृष्टिकोण रखना चाहिए। संकुचित मन वाला व्यक्ति अपने मन में कभी भी सदविचारों को नही पनपा सकता। इसलिए हमारे पूर्वजों ने वसुधैव कुटुम्बकम् का व्यापक विचार दिया। हमे मानव मात्र के प्रति व्यापक दृष्टिकोण रखना चाहिए। सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः यह विशाल भाव ही राष्ट्र रक्षा कर सकता है। अतः राष्ट्र की उन्नती के लिए व्यापक दृष्टिकोण होना चाहिए।

3. सरलता - राष्ट्रोन्नति व राष्ट्र रक्षण चाहने वाले व्यक्ति के मन में सरलता होनी चाहिए। निष्कपट भाव मन में होना चाहिए। जीवन मे सादगी, छलकपट रहित भाव से ही उत्तम व्यवहार आता है। उत्तम व्यवहार होने से राष्ट्र का यश बढ़ता है। सरल स्वभाव से सभी के प्रति सम्भाव निर्माण होता है जो राष्ट्र रक्षा के लिए आवश्यक है।

4. उग्रता - राष्ट्र रक्षण के लिए सरलता के साथ-साथ उग्रता भी आवश्यक है। उग्रता, वीरता, शोर्य, धैर्य और युद्ध का सामर्थ्य यह सभी गुण राष्ट्र रक्षण के आवश्यक तत्व है। इसी भाव को अपराज्य शक्ति कहा गया है। हम किसी पर आक्रमण नही करेंगें परन्तु यदि कोई राष्ट्र पर तिरछी दृष्टि रखता है तो उसे सबक सिखाने का सामर्थ्य होना चाहिए। उग्रता क्षात्र धर्म है राष्ट्र रक्षा के लिए क्षत्रिय भाव होना आवश्यक है उग्रता क्षत्रिय का गुण है राष्ट्र रक्षा के लिए क्षत्रिय भाव भी आवश्यक माना गया है। राष्ट्र रक्षा के लिए क्षत्रिय भाव का विशेष महत्व है।

5. दक्षता - किसी भी राष्ट्र के संरक्षण के लिए राष्ट्र के लोगो में दक्षता का होना आवश्यक है। दक्षता का अर्थ है सावधानता।

प्रत्येक क्षण सावधान रहना दक्षता है। राष्ट्र जीवन के समस्त कार्य दक्षता पूर्ण व निर्दोषिता से सम्पन्न करना चाहिए। शिथिलता व असावधानी पूर्ण करने से कोई भी कार्य उचित रीति से नही किया जा सकता। परिणामतः देश रक्षा सम्यक प्रकार से संभव नही हो सकता। अतः मातृभूमि के रक्षक नागरिक को दक्ष होना आवश्यक है।

6. तप - (शीतोष्ण सहन करने की क्षमता) सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय समस्त स्थितियों में जो समभाव रखता है अर्थात समान रहता है। सभी प्रकार के द्वन्दो व कष्टो में उत्साह पूर्ण ढंग से अपना कार्य सम्पन्न करता है। वही व्यक्ति राष्ट्र कार्य में सफल हो सकता है। जो व्यक्ति छोटे-छोटे आघातों से विचलित हो जाता है। शीत लगने पर ज्वर से पीडित तथा उष्णता में शिरोवेदना से पीडित हो जाता है। ऐसा व्यक्ति राष्ट्र का रक्षण कभी नही कर सकता। सभी प्रकार की अवस्थाओं मे जो दृढ़ रहता है वही राष्ट्र का संरक्षण कर सकता है।

7. ज्ञान - ज्ञान और विज्ञान मानव उन्नति के लिए आवश्यक है। ज्ञान और विज्ञान के बिना मनुष्य अन्धा है। विज्ञान से भौतिक सुखों में वृद्धि तथा आत्मज्ञान से मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह स्वयं को ज्ञान और विज्ञान से समन्वित करे। राष्ट्र की उन्नति के लिए ज्ञान और विज्ञान दोनो सम परिमाण में रहने चाहिए। यदि देश में विज्ञान बढेगा और आध्यात्मिकता (ज्ञान) कम होगी तो नास्तिकता बढेगी। भौतिक सुख बढेंगे और आत्मिक अशान्ति उत्पन्न होगी। यदि देश केवल आत्मज्ञान बढेगा तथा विज्ञान की ओर ध्यान नही रहेगा तो निष्क्रियता बढेगी तथा देश मे भौतिक सुखो कि परि समाप्ति होगी। अतः राष्ट्र की उन्नति के लिए ज्ञान और विज्ञान दोनो का सम मात्रा में विकास आवश्यक है। इसी को हमारे ऋषियों ने ब्रह्मज्ञान कहा है। अर्थात ज्ञान और विज्ञान का समन्वय ही ब्रह्मज्ञान कहलाता है। राष्ट्र की उन्नति के लिए ज्ञान और विज्ञान दोनो का समन्वय आवश्यक है।

8. यज्ञ- श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करना, आपस में मिलजुल कर रहना तथा दोनो की उन्नति या कल्याण के लिए कार्य करना यह तीनो कार्य यज्ञ के अन्तर्गत आते है। राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक है। अपने महापुरुषों का सम्मान किया जाये जिससे उनसे प्रेरणा लेकर अपनी मातृभूमि को और अधिक उन्नत किया जा सके। सभी जब एक दूसरे की उन्नति का विचार करते है तो राष्ट्रभाव स्वाभाविक रूप से प्रबल होता है परिणामतः राष्ट्र की उन्नति का विचार सभी के मन में प्रबल हो उठता है। इसी भाव से राष्ट्र की तथा स्व की उन्नति होती है। इसलिए राष्ट्र उन्नति के लिए यज्ञ रूपी गुण होना आवश्यक है। राष्ट्र के लिए सर्वस्य समर्पण का भाव ही यज्ञ है।

मातृभूमि के संरक्षण के लिए इन आठ गुणों का होना आवश्यक है इनके अभाव में कोई भी राष्ट्र उन्नति नही कर सकता। हमारे राष्ट्र की अवनति का यही कारण है। सर्वत्र स्वार्थ परता व्यक्तिगत जीवन जीने का भाव राष्ट्र की उन्नति के लिए बताये गये समस्त गुणों का अभाव ही हमारे राष्ट्र की उन्नति के लिए जो आवश्यक है। उन सभी गुणों का विकास प्रत्येक स्तर पर होना चाहिए। इसी से उन्नत समाज का निर्माण सम्भव है। इसी से समाज व राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। यही मार्ग है राष्ट्र की उन्नति का। नान्या पन्थाः

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय
विभागाध्यक्ष हिन्दू अध्ययन

संस्कृत सप्ताह (05 अगस्त से 12 अगस्त 2022)

10 अगस्त 2022 महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मून्दड़ी, कैथल एवं भारत विकास परिषद (हरियाणा मध्य प्रान्त) के संयुक्त तत्त्वाधान में संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी, देवडू रोड़, सोनीपत में किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, अध्यक्ष श्री नीरज शर्मा (चेयरमैन), ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी, मुख्यातिथि प्रो. डॉ. अशोक शर्मा (अधिष्ठाता), दीनबन्धु छोटू राम विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल, सोनीपत रहे।

12 अगस्त 2022 महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मून्दड़ी (कैथल) द्वारा संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन किया गया । इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री आर. सी. मिश्रा, पुलिस महानिदेशक एवं प्रबन्ध निदेशक, हरियाणा पुलिस हॉउसिंग कॉर्पोरेशन तथा मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. रवि भूषण, अधिष्ठाता, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र ने सहभागिता की। समारोह के दौरान पुलिस अधिक्षक, कैथल एवं बड़ी संख्या में कैथल शहर के गणमान्य व्यक्ति एवं विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों/कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश भारद्वाज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कैथल की धरा को महान ऋषि-मुनियों की जन्म भूमि एवं कर्मस्थली बताया । उन्होंने कैथल में हरियाणा सरकार द्वारा महर्षि वाल्मीकि के नाम से संस्कृत विश्वविद्यालय खोलने का कारण कैथल को वैदिक भूमि होना बताया । कुलपति महोदय ने सभी उपस्थित महानुभवों को आश्वस्त किया कि सबकी सामूहिक भागीदारी के बल पर विश्वविद्यालय को एक वैश्विक स्तर के वैदिक शोध केन्द्र के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जायेगा। तदोपरान्त समारोह के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता को स्मृति चिंह भेंट कर सम्मानित किया गया।

(चित्र 1) विश्वविद्यालय के कुलपति अध्यक्षीय उद्धबोधन करते हुए। (चित्र-2) मुख्यातिथि श्री आर. सी. मिश्रा एवं (चित्र-3) में प्रो. रवि भूषण को विश्वविद्यालय के कुलपति एवं अधिष्ठाता (शैक्षणिक) स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मून्दड़ी (कैथल) द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के उपलक्ष्य में ***13 अगस्त से 15 अगस्त 'हर घर तिरंगा'*** कार्यक्रम के आयोजन से पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति की नेतृत्त्व में विश्वविद्यालय के अम्बाला मार्ग पर स्थित अस्थाई परिसर डॉ भीम राव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय में तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के सभी प्राध्यापकों. शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक अधिकारियो एवं कर्मचारियों ने बढ-चढकर भाग लिया। इससे पूर्व कुलपति जी ने सभी अधिकारीयों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय ध्वज वितरित किए।

हर-घर तिरंगा

अभियान

13 से 15 अगस्त 2022

आजादी अमृत महोत्सव समारोह

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मून्दड़ी (कैथल) द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के उपलक्ष्य में ***13 अगस्त से 15 अगस्त 'हर घर तिरंगा'*** कार्यक्रम का आयोजन ग्राम मून्दड़ी में किया। इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में कुलपति प्रो. रमेश भारद्वाज की अगुवाई में विश्वविद्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों/विद्यार्थियों एवं आस-पास के गाँव के स्कूलों से आए छात्र-छात्राओं ने मिलकर प्रभात फेरी निकाली।

इसके उपरान्त "श्री लवकुश तीर्थ", मून्दड़ी में देशभक्ति गीत/भाषण प्रतियोगिता आयोजित की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. भाग सिंह बोदला ने आए हुए सभी गणमान्य लोगों एवं छात्रों का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने "हर घर तिरंगा" के महत्व तथा आजादी के महत्व विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

देश भक्ति प्रतियोगिता में भिन्न-भिन्न स्कूलों से 25 से अधिक छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। प्रथम पुरस्कार 1100/- रूपये प्राची, लवकुश वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मून्दड़ी तथा द्वितीय पुरस्कार 700/- रूपये प्रतीक, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नैना धौस एवं तृतीय पुरस्कार 500/- रूपये मांऊट लिटरेरा जी विद्यालय, काकोत एवं सान्त्वना पुरस्कार 100/- रूपये 10 विद्यार्थियों को दिया गया।

दिनांक 14 अगस्त 2022 आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के निर्माणाधीन परिसर मून्दड़ी में महामहिम राज्यपाल महोदय की प्रेरणा से विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने वट वृक्ष, पीपल तथा नीम के वृक्ष की त्रिवेणी का रोपण किया।

15 अगस्त को परिसर में ध्वजारोहण माननीय कुलपति जी ने किया। इस अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने अपने भाषण में आजादी के महत्व को बताते हुए अपने विचारों को सांझा किया। आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यों ने अपनी प्रस्तुति दी।

संस्कृत विश्वविद्यालय ने मनाया राष्ट्रीय उद्यमिता दिवस

दिनांक 31 अगस्त को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय उद्यमिता दिवस के अवसर पर उद्यमिता प्रोत्साहन कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक मंगलाचरण एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे ने किया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. संजीव शर्मा ने स्वागत भाषण के साथ मुख्यातिथि एवं सास्वत अतिथियों को शाल तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि बेरोजगारी से निदान केवल कुशल उद्यमों के निर्माण से हो सकता है। माननीय कुलपति महोदय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आत्मनिर्भरता पर आधारित पाठ्यक्रमों के माध्यम से सभी विद्यार्थीयों का सर्वांगीण विकास संभव है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, मुख्यवक्ता श्री पवन कुमार (उत्तर क्षेत्र संघटन मंत्री भारतीय मजदूर संघ), मुख्यातिथि श्री संजय चौधरी (चौधरी मार्बल, कैथल), अमित गोयल (शिव कैलाश ग्रीन एनर्जी प्रा. लि. चीका) उपस्थित रहे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विश्व ओजोन दिवस

16-09-2022 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल में विश्व ओजोन दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के अलग-अलग विभागों के विभागाध्यक्षों द्वारा विद्यार्थियों को ओजोन परत के बारे में विस्तृत रूप से बताया। आठ विभागों में **"पृथ्वी पर जीवन संरक्षण को लेकर वैश्विक सहयोग"** विषय पर स्लोगन व लेखन प्रतियोगिता करवाई गई, जिसमें 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभी विभागों के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विभाग स्तर पर प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया।

राष्ट्रीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता

20-09-2022 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल द्वारा राष्ट्रीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, मुख्यातिथि स्वामी रमनपुरी जी महाराज एवं विशिष्ट अतिथि स्वामी मेगदास जी महाराज उपस्थित रहे।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दिवाकर शर्मा, श्री मुक्तिनाथ वेद विद्याश्रम संस्कृत गुरुकुल, पंचकूला माता मनसा देवी परिसर, द्वितीय स्थान दीपक शर्मा, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल तथा तृतीय स्थान कीर्ति आर्या, शान्ति निकेतन कन्या गुरुकुल लावां कला झज्जर ने प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में पाँच सांत्वना पुरस्कारों में अन्नु, श्री रतिराम संस्कृत महाविद्यालय, जीन्द, भिव्या महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, शिवम शर्मा, जयराम विद्यापीठ कुरूक्षेत्र, सुमेधा आर्या, शांति निकेतन कन्या गुरुकुल झज्जर व नवीन महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल ने प्राप्त किया।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को ₹ 5100, ₹ 3100, ₹ 2100, तथा पाँच प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में ₹ 1100 एवं स्मृति चिन्ह के साथ प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

महात्मा गाँधी जयंती कार्यक्रम

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में महात्मा गाँधी जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के सूत्रधार के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने शिरकत की। इस अवसर पर अध्यक्षा के रूप में प्रो. गीता सहारे (अध्यक्षा, महिला संघ), दिल्ली विश्वविद्यालय एवं मुख्यवक्ता प्रो. बलवान गौतम (विभाग, राजनीतिक विज्ञान) दिल्ली विश्वविद्यालय उपस्थित रहे।

प्रो. बलवान गौतम ने गाँधी जी की विचाधारा, उनके व्यक्तित्व एवं भारत की स्वतंत्रता में उनके योगदान के विषय में सभी विद्यार्थीयों को अवगत करवाया। वर्ष 1920-47 के मध्य होने वाले अनेक जन-आन्दोलनों का जनता को एकत्र कर सफल संचालन किया।

प्रो. गीता सहारे ने विद्यार्थियों को कवितामय पंक्तियों से गाँधी की विचारधारा से अवगत कराया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने सभी का अभिनन्दन करते हुए कहा कि भारतीय भूमि हमेशा से ही राजनीतिक और आर्थिक आन्दोलनों की भूमि रही है। इनमें महात्मा गाँधी जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके लम्बे संघर्ष के कारण ही देश को आजादी मिली थी। हमारी भारतभूमि की स्वतंत्रता में विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों, युवाओं एवं समाज सुधारकों का योगदान रहा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मेरा गाँव काकौत

काकौत गाँव हरियाणा राज्य के कैथल जिले का प्रसिद्ध गाँव है। जो कैथल से 9 कि.मी. की दूरी पर करनाल मार्ग पर स्थित है। काकौत गाँव वीरों की भूमि है, यहाँ से अनेक ऐसे शिक्षित व्यक्ति रहे हैं जो अपनी सेवाएं प्रशासनिक क्षेत्रों तथा भारतीय सेना में दे चुके हैं और वर्तमान में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। देश की रक्षा के लिए इस गाँव के शूरवीरों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जिनमें से श्री ताला राम (स्वतंत्रा सेनानी), श्री सरदार राम (1971 के युद्ध में शहीद), श्री रोनकी राम (1965 का युद्ध लड़े), श्री पिरथी सिंह (1965 व 1971 का युद्ध लड़े- नायब सूबेदार), श्री महेन्द्र सिंह (सूबेदार सेवा निवृत्त), श्री सुरेश कैत (न्यायाधीश उच्च न्यायालय), श्री जीतराम कैत (कमिश्नर सेवानिवृत्त), श्री रामकिशन कटारिया (एस. एम. ओ), श्री सुभाष सिंह (हरियाणा सिविल सर्विस) प्रमुख है।

काकौत का प्राचीन नाम –

काकौत का प्राचीन नाम 'कुकृत्यनाशन' था। जो काकौटी, कुकृत्यनासक तीर्थ के कारण ही पड़ा। द्वापरयुग में कुकृत्य नाशक तीर्थ ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है। इस तीर्थ का संबंध रामायण और महाभारत युग से है। इसी स्थान पर महर्षि विश्वामित्र और ऋषि वशिष्ठ के संदेशो का पालन करते हुए भगवान श्री रामचन्द्र ने मर्यादा पुरूषोत्तम जीवन के संदेश ग्रहण किये। महाभारत काल में इसी स्थान पर पाँच पाण्डवों की माता कुंती ने तप किया और पवित्र सरोवर में स्नान कर पाप नाशन का संदेश दिया। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र भूमि की 48 कोस परिधि में विद्यमान हैं। तीर्थ तट पर स्थित वीर बजरंग बली हनुमान मन्दिर, परिसर में सांख्य दर्शन के प्रवर्तक भगवान कपिल मुनि, प्राचीन शिव मन्दिर और अन्य देवी-देवताओं के मन्दिर हैं। बुजुर्गो का कहना हैं कि पूर्व में खुदाई के दौरान सरोवर की तलहट से प्राचीन काल की पौड़ियां मिली। इस प्रकार के महत्वपूर्ण अवशेषों की पूर्ण जानकारी समय-समय पर कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड को दी जाती रही हैं।

गाँव का परिचय -

2011 की जनगणना के अनुसार गाँव की कुल जनसंख्या 6,018 है। जो 13.34 किलोमीटर के क्षेत्रफल में निवास करती है। गाँव की कुल साक्षारता दर 66.48% है, जिसमें 76.43 % पुरुष, 54.29 % महिला हैं। गाँव का कुल लिंग अनुपात 808 हैं। गाँव में कुल 1124 परिवार रहते हैं। काकौत गाँव का विधानसभा क्षेत्र कलायत, संसदीय क्षेत्र कुरूक्षेत्र है।

शिक्षण संस्थान-

- ❖ सन् 2018 में हरियाणा सरकार ने कैथल जिले में प्रदेश का पहला संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित किया जिसका नाम महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय है जिसके परिसर का निर्माण काकौत गाँव से मात्र 4 कि. मी. की दूरी पर लव-कुश की जन्म भूमि गाँव मून्दड़ी (मौनधारा) में हो रहा है। वर्तमान में विश्वविद्यालय का अस्थाई परिसर डॉ. भीम राव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, जगदीशपुरा, अम्बाला मार्ग पर स्थित है।
- ❖ हरियाणा सरकार ने कैथल जिले में प्रदेश का पहला मेडिकल कॉलेज स्थापित करने की घोषणा की जो काकौत गाँव से मात्र 3 कि.मी. की दुरी पर सांपली खेड़ी गाँव में बनाया जाएगा।
- ❖ गाँव में पहला सरकारी स्कूल 1954 में खोला गया था जो वर्तमान में यहाँ गाँव के विद्यार्थीयों के साथ-साथ अन्य गाँवों के विद्यार्थीयों को भी शिक्षा प्रदान करता हैं। इसके अलावा गाँव में निम्न निजी विद्यालय भी हैं जो विद्यार्थीयों के शिक्षा स्तर को उँचा उठाने में तत्पर है- सरस्वती वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैनिक वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैनिक एस. आर. माध्यमिक विद्यालय, सन राइज पब्लिक स्कूल, ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल, माउंट लिटेरा जी स्कूल।

कुकृत्यनाशन तीर्थ -

कुकृत्यनाशन (कुकृत्य अर्थात बुरे कर्म या पाप नाशन) तीर्थ का अर्थ है - नष्ट करना, वह तीर्थ जो पाप को नष्ट करता है। कुरुक्षेत्र की 48 कोस की पवित्र भूमि का पावन तीर्थ कैथल से 9 किलोमीटर की दूरी पर गाँव काकौत के उत्तर-पूर्व में स्थित है। 5 एकड़ में सरोवर और डेढ़ एकड में मन्दिर का परिसर है।

पदम पुराण के स्वर्ग खण्ड में कुरूक्षेत्र भूमि के जिन तीर्थों का वर्णन है उनमें कुकृत्य तीर्थ का उल्लेख भी मिलता है। प्रसिद्ध संत स्वामी नारायण गिरी जी ने अपनी पुस्तक 'कुरूक्षेत्र पथ प्रदर्शक' में लिखा है जो मनुष्य काकौत गांव स्थित पवित्र कुकृत्यनाशन तीर्थ में स्नान कर तारकेश्वर भगवान शिव का ध्यान कर पूजन करता है और तारक मंत्र का जाप करता है उसे विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

प्रचलित जनश्रुतियों के अनुसार यह वही स्थान है जहाँ पर महर्षि वशिष्ठ व महर्षि विश्वामित्र के मध्य शास्त्रार्थ हुआ था। एक अन्य जनश्रुति के अनुसार माता कुंती ने यहाँ तपस्या की थी। कुकृत्यनाशन तीर्थ का संबंध तारकेश्वर भगवान शिव से माना जाता है। अनेक ऋषियों ने जप-तप किए और दुष्कर्मो का विनाश किया। इस तीर्थ की मान्यता शरद ऋतु में 30 दिन लगातार स्नान करने से कुष्ठ रोग खत्म हो जाता है। सात दिन लगातार स्नान करने से खाज-खुजली व अन्य चर्म रोग खत्म हो जाते है। महाशिवरात्री पर यहाँ बड़ा भारी मेला लगता है। सरोवर पर महिला व पुरुष घाट बने हुए है।

अष्ट कोणिय आधार पर नागर शिखर युक्त शिव मन्दिर है। जिसका नवीनीकरण किया गया है मन्दिर के गर्भगृह में शिवलिंग के अतिरिक्त गणेश, पार्वती व नंदी बैल की संगमरमर की प्रतिमाएं है। गर्भगृह के भित्ति चित्रों में राम-लक्ष्मण को कंधे पर उठाये हुए हनुमान जी की मूर्ति, गोपियों के साथ रास लीला करते कृष्ण भगवान तथा गणेश आदि के चित्र है मन्दिर परिसर में तारकेश्वर भगवान शिव, कपिल मुनि व हनुमान जी के मन्दिर आधुनिक शैली में बने हुए है।

परिवहन -

यह गांव कैथल बस स्टैंड से मात्र 9 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। कैथल से दिल्ली, चण्डीगढ, हिसार, जम्मू, हरिद्वार के साथ- साथ लगभग हरियाणा के सभी जिलों में पहुँचने की सुविधाएं उपलब्ध हैं। गाँव के नजदीक रेलवे स्टेशन, न्यू कैथल हॉल्ट रेलवे स्टेशन, कैथल रेलवे स्टेशन, और ग्योंग रेलवे स्टेशन हैं।

अन्य सुविधाएं –

गाँव में सरकार द्वारा दी जाने वाली सभी योजनाओं का लाभ समय-समय पर ग्रामीणों को मिलता रहता हैं। गाँव में पशुओं का सरकारी अस्पताल, पंचायत घर, डाकघर, 'कामन सर्विस सेंटर्स'की भी व्यवस्था है।

प्रीति देवी, पूजा रानी,
आचार्य -प्रथम वर्ष (हिन्दू अध्ययन)
पिंकी, आचार्य तृतीया (साहित्य)

प्रश्नमञ्जरी

(१) भास के नाटक चक्र में कितने नाटक है ?
(क) 13 (ख) 09 (ग) 20 (घ) 14
(२) भास के नाटकों की कथा वस्तु का आधार है ?
(क) महाभारत (ख) रामायण (ग) कल्पित (घ) पौराणिक।
(३) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' की व्याख्या की है ?
(क) भानुमित्र (ख) जगन्नाथ (ग) विश्वनाथ (घ) मल्लिनाथ।
(४) साहित्यशास्त्र का प्रसिद्ध आधार ग्रन्थ है ?
(क) काव्य प्रकाश (ख) भाव प्रकाश (ग) ध्वन्यालोक (घ) रसगंगाज
(४) सूर्यशतक के प्रणेता थे ?
(क) वाणभट्ट (ख) भर्तृहरि (ग) तेजोभानु (घ)मयूर
(६) भारतीय ललित कलाओं के प्रथम आचार्य है?
(क) भरतमुनि (ख) कोहलाचार्य (ग) मतंग (घ) अभिनन गुप्त
(७) भट्टिकाव्य का दूसरा नाम ?
(क) रावण वध (ख) शिशुपाल वध (ग) दुर्योधन वध (घ) कंस वध
(८) रजतरंगिणी में किस प्रदेश का इतिहास वर्णित है ?
(क) केरल (ख) बंगाल (ग) गुजरात (घ) काश्मीर
(९) प्रश्नोपनिषद् में प्रश्नों की संख्या कितनी है ?
(क) 11 (ख) 25 (ग) 09 (घ) 06
(१०) किरातार्जुनीयम् के कवि है ?
(क) भोज (ख) भारवि (ग) भट्टि (घ) भवभूति

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(नवमाङ्कस्य उत्तराणि)

(1) मथुरा प्रसाद दीक्षित (2) आयुर्वेद (3) पराशर (4) ज्योतिष
(5) उत्तररामचरितम् (6) इन्द्रवज्रा (7) वेद (8) विद्यारण्य
(9) मीमांसा (10) अर्धमागधी

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

(जननी और जन्मभूमि स्वर्ग के समान होती है)

अस्याः सूक्तेः अयम् अर्थः यत् जननी अर्थात् माता, जन्मभूमिः च अर्थात् सः देश यत्र जनस्य जन्म भवति एते उभे स्वर्गात् स्वर्ग स्थानात् अपि गरीयस्यौ । लोके इदं विश्रुतः भवति यत् स्वर्गलोके दुःखानाम् एव विधक्लेशानां च निराकरणं भवति तत्रं सर्वसुखानाम् उद्भवो भवति।

दुःख स्थानं नरकं विहार सर्वे जनाः सुखस्य परमोच्चस्थानम् स्वर्ग कगयन्ते । परम अत्र अन्यत् एव प्रतिपादितम् स्वर्गतः अपि द्वै महत्तरे स्वः एका जन्मदात्री जननी अपरां च नज़ भूमि एवाभ्यास जनः स्वर्गादिपि अधिकं सुखं प्राप्नोति इति अभिप्रायः।

मित्राणि धन धान्यानि प्रजानां सम्मतानिव।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

निज गर्भ संतान धृत्वा जननी तं तत्र रक्षति पोषयति च। जन्मनःऊर्ध्वं जननी निजं दापत्यं दिवारात्रम् एक मनसा रक्षति तस्य दुःखानि अपोहति तस्य जीवन सुखानां च सचरणं करोति। स्वयं तदेव सर्व विधानि कष्टानि सहते।जन्मभूमिः अपि स्वर्गात श्रेष्ठः अस्ति। सा लोकानां शरणदायिनी, विविध खाद्यपदार्थ प्रदायनी लीलाभूमिः सर्व व्यवहाराणां तिष्ठति। अतएव सत्यं उक्तम्-

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

रजनी देवी
(एम.ए. हिन्दू अध्ययन)

समयस्य सदुपयोगः

संसारस्य सर्वेषु वस्तुषु समयः अधिकं महत्वपूर्णः अधिकं च मूल्वान् वस्तु वर्तते । अन्यानि विनिष्टानि पुनरपि लब्धुं शक्यन्ते परं समयः विनिष्टः केनापि उपायेन पुनः परवर्तयितुं न शक्यते। समयः कस्यापि प्रतीक्षां न करोति।

अनेके जनाः निरर्थक रूपेण समयं यापयन्ति । ते द्यूते, नृत्यदर्शने, कलहे, वृथा भ्रमणे पिशुनतायां चाटुकारितायां च समस्तं समयं नयन्ति । स्व जीवनस्य च बहुमूल्यम् अंशं वृथा यापयन्ति।

समस्तसदुपयोगजीवनसफलतायाः प्रथमं सोपानाम् समुन्नतेः मूलमन्त्रम् आत्मनिर्माणस्य च परमं साधनम् अस्ति । प्रकृतिः अपि इयमेव शिक्षां ददाति यत् नहि केनापि समयस्य दुरूपयोगः कर्त्तव्यः इति । ये जनाः कदापि समयस्य दुरूपयोग न कुर्वन्ति, सदैव च कार्यसंलग्नाः भवन्ति, ते सुखेनैव तिष्ठन्ति । तादृशाः एव कर्मवीराः सर्वत्र श्रेष्ठपदं लभन्ते।

उत्तमाः छात्राः सदा समस्य महत्वं जानन्ति, ते समये उतिष्ठन्ति, स्वकार्यं च तत्परतया कुर्वन्ति । अतः ते उन्नतिं सफलतां च प्राप्नुवन्ति । परं प्रमादो छात्रः कदापि उन्नतिं न अधिगच्छति । अतः अस्माभिः आलस्यं विहाय सर्वदैव समयस्य सदुपयोगः कर्त्तव्यः । एकमपि क्षणं वृथा न यापनीयम्।

डॉ. महावीर
(लिपिक-शैक्षणिक)

सुभाषितानि

मातेव रक्षति पितवे हिते नियुङ;क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च चिक्षु कीर्तिम्,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ।।

विद्या माता की तरह रक्षा करती है, पिता की भाँति भलाई के कामों में लगाती है, स्त्री की तरह मनोविनोद करती है और दुःख दूर करती है। अच्छाइयों को फैलाती है और सब ओर यश फैलाती है- इस प्रकार विद्या मनुष्य को ज्ञान देकर मनचाही सभी सिद्धियाँ, सफलताएं प्रदान करती है मानो यह कल्पलता की तरह सभी कामनाएं पूरी करती हो।

पर्यावरण संदेश

मुझको तुम मत काटो प्यारे
हम है तुम सबके रखवारे।
हम नभ में बदरा लाते हैं,
बरखा फिर हम करवाते हैं
धरती पर छाए हरियाली
खुशियां फैले द्वारे-द्वारे।

पूनम कादियान
(सहायक आचार्या- पर्यावरण अध्ययन)

श्रीकृष्णाय वयं नुमः

प्रातश्चराचरजगत्परिपालकेशं
श्रीकालकालशुभभालविशालकेशम्।
गोपाङ्गनाहृदयसंस्थितराधिकेशं
श्रीकृष्णचन्द्रभगवन्तमहं नमामि ।।01।।

प्रातर्व्रजाधिपतिनन्दकुमारवर्यं
गोवर्धनात्मपरिरक्षितमित्रवृन्दम्।
नृत्यैर्हृतन्निजसमस्तसुभक्तचित्तं
श्रीकृष्णचन्द्रभगवन्तमहं नमामि ।।02।।

प्रातस्सुपीतपटविश्वजितं सुरेशं
वंशीधरेशशरणागतपालकेशम्।
पापिप्रणाशकसुसज्जनरक्षकेशं
श्रीकृष्णचन्द्रभगवन्तमहं नमामि ।।03।।

प्रातर्भवाब्धिशिवनाविकशान्तमूर्त्तिं
निर्वंशवंशदविशिष्टविशालदृष्टिम्।
दुःखाग्निदग्धसुखवारिदसत्यकीर्त्तिं
श्रीकृष्णचन्द्रभगवन्तमहं नमामि ।।04।।

प्रातश्च गोपवनितावृतबालरूपं
वृन्दालतातरुतलस्थितगोपिकेशम्।
वेणुप्रियस्वरविमोहितभक्तचित्तं
श्रीकृष्णचन्द्रभगवन्तमहं नमामि ।।05।।

प्रातस्सदा समरमर्दितनैकवीरं
विज्ञाज्ञनिर्धनधनेशसमानभावम्।
नीलोत्पलादपि मृदुं व्रजतः कठोरं
श्रीकृष्णचन्द्रभगवन्तमहं नमामि ।।06।।

प्रातर्भुजङ्गपतिरूपधरानुजेशं
सृष्टिप्रपालनपरेशखलान्तकेशम्।
सर्वेशचक्रधरपाण्डवरक्षकेशं
श्रीकृष्णचन्द्रभगवन्तमहं नमामि।।07।।

प्रातः ठुमुक्ठुमुगहो परिसञ्चलन्तं
बालक्रियाजनकचित्तमहो हरन्तम्।
नैजाधरे प्रियतमां मुरलीं धरन्तं
श्रीकृष्णचन्द्रभगवन्तमहं नमामि ।।08।।

डॉ. शशिकान्त तिवारी 'शशिधर'
विभागाध्यक्ष दर्शनविभाग